RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-03
Issue-09
September-2018

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

माध्यमिक स्तर पर हिन्दी भाषा में संज्ञा के ज्ञान में मल्टीमीडिया उपागम का अधिगम स्तर पर प्रभाव का अध्ययन (भोपाल जिले के संदर्भ में)

[1]ज्योति पाल और [2]डॉ. संस्मृति मिश्रा

[1]सहायक प्राध्यापक सैम कॉलेज, भोपाल (भारत)
[2]क्रिस्प भोपाल (भारत)

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 07 September 2018

Keywords
मल्टीमीडिया उपागम, अधिगम स्तर

ABSTRACT

आज हिन्दी भाषा शिक्षण की महती आवश्यकता व महत्वपूर्ण भूमिका के कारण शिक्षकों पर दिन–प्रति–दिन यह दबाव पड़ रहा है कि उन्हें परम्परागत विधि त्याग कर नवीन विकसित विधियों को अपनाना चाहिए, किन्तु इन नवीन विकसित विधियों को सही व वैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत अधिगम में वृद्धि करना भी आवश्यक है। शिक्षण अधिगम की इन्हीं अवधारणाओं को ध्यान में रखकर यह शोधकार्य किया गया है। प्रस्तुत शोध कार्य मेंभोपाल जिले के 5 सी.बी.एस.ई. व 5 म.प्र. बोर्ड के विद्यालयों से कक्षा 8 के 20 छात्र व 20 छात्राओं का चयन किया गया।

भाषा शिक्षण का अर्थ है लिपि, वर्तनी, सुलेख व व्याकरण का ज्ञान देना, शब्द भण्डार की वृद्धि करना, मुहावरों, सूक्तियों व लोकोक्तियों की समझ परिपक्व करना, रस, छन्द, अलंकार का बोध करना, कविता से रसानुभूति ग्रहण करना, गद्य का आदर्श वाचन और पठित अंश से अर्थ ग्रहण करना, अपने विचारों का निर्माण करना एवं प्रसंगानुसार उन्हें व्यक्त करना। अपनी लिखित व मौखिक अभिव्यक्ति को श्रेष्ठ बनाना। उक्त सभी विषयों का बोध व दक्षता प्रदर्शित करना ही भाषा शिक्षण का उद्देश्य है। वास्तव में भाषा शिक्षण के इन सभी उद्देश्यों की प्राप्ति सहज भाषा कार्य नहीं है। शोध के आंकड़ों से स्पष्ट है परंपरागत विधि से अधिगम स्तर की प्रभावशीलता में कोई वृद्धि नहीं हुई। वास्तव में शोध के आंकड़े बताते माध्यमिक स्तर में व्याकरणगत वर्तनीगत अशुद्धियों, कुच्चारण संबंधी त्रुटियों में निरंतर वृद्धि हो रही है। अतः यह स्पष्ट है कि इन अशुद्धियों त्रुटियों को सुधारने में परंपरागत विधि से शिक्षण कारगर नहीं हो पा रहा है।

अतः परंपरागत विधि से से हटकर अपरंपरागत शिक्षण विधियों को प्रयोग में लाना होगा। आजकल प्रोद्यौगिकी के बढ़ते चलन के कारण शिक्षण विधियां भी उससे अछूती नहीं है। इसी प्रोद्यौगिकी का नवीन उपागम है मल्टीमीडिया। प्रस्तुत शोध पत्र मल्टीमीडिया आधारित माध्यमिक स्तर पर हिन्दी शिक्षण करने पर अधिगम स्तर पर पड़ने वाली प्रभावशीलता को समझने का विनम्र प्रयास है।

मल्टीमीडिया एक बहुआयामी शिक्षण की व्यवस्था है। भारत की शिक्षा प्रणाली में हिन्दी भाषा में मल्टीमीडिया के प्रयोग से न केवल शिक्षा के स्तर को उच्च किया जा सकता है, वरन् 'करके सीखने की क्षमता' का विकास सहज ही किया जा सकता है। मल्टीमीडिया में शिक्षण के दौरान छात्र सजग रहता है क्योंकि लागातार फीडबैक से सीखने की क्षमता का आंकलन तुरंत संभव हो जाता है। उपलब्ध शोध साहित्य के अनुशीलन से यह तथ्य सामने आए हैं कि हिन्दी भाषा में सर्वेक्षण शोध व शिक्षण विधियों पर शोध कार्य सम्पन्न हुए हैं, परन्तु अंग्रेजी भाषा की तुलना में हिन्दी भाषा में इस प्रकार के शोध कम संख्या में हुए हैं। हिन्दी भाषा अधिगम को लेकर किए गए शोध अध्ययनों में अधिकतर शोध भाषा के सभी कौशलों पर बल नहीं देते हैं। साथ ही माध्यमिक स्तर के हिन्दी भाषा में अधिगम में मल्टीमीडिया उपागम के प्रभाव संबंधी कारणों को लेकर किए जाने वाले शोध की संख्या तो नगण्य है। निर्धारित दक्षताएँ अथवा कौशल जिन्हें भाषा अधिगम स्तर कहा जाता है, को प्राप्त करने में वे बहुत ही पीछे है, भाषा अधिगम बहुआयामी और सबसे महत्वपूर्ण सम्प्रत्यय है।

अध्ययन के उद्देश्य

शोधार्थी ने समस्या को दृष्टिगत रखते हुए अग्रलिखित उद्देश्य निर्धारित किए हैं:–

हिन्दी भाषा व व्याकरण में अधिगम स्तर की वृद्धि के लिए नवीन शिक्षण विधियों के चयन की विवेचना करना।

हिन्दी भाषा संज्ञा के ज्ञान में मल्टीमीडिया उपागम की प्रभावशीलता का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना

संज्ञा के ज्ञान की उपलब्धि में प्रयोगात्मक व नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

अध्ययन के चर

1. **स्वतंत्र चर.. सी.बी.एस.ई. बोर्ड के एवं म.प्र. बोर्ड के विद्यार्थी**
2. **आश्रित चर..**

उपलब्धि–विद्यार्थियों द्वारा हिन्दी भाषा व व्याकरण के परीक्षण में प्राप्त अंकों (उपलब्धि) को आश्रित चर के रूप में लिया गया।

अध्ययन की परिसीमाएँ

- प्रस्तुत शोध म.प्र. के भोपाल जिले के शहरी क्षेत्रों तक ही सीमित है।
- प्रस्तुत शोध भोपाल शहर के केवल 10 निजी विद्यालयों तक ही सीमित है।
- प्रस्तुत शोध कार्य में 5 सी.बी.एस.ई. विद्यालय व 5 म.प्र. बोर्ड के विद्यालयों का चयन किया गया।
- प्रत्येक विद्यालय के केवल कक्षा 8 के विद्यार्थियों का चयन किया गया।
- प्रत्येक विद्यालय से कक्षा 8 के 20 छात्र व 20 छात्राओं का चयन किया गया।

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

अध्ययन विधि

प्रस्तुत शोध कार्य मे समस्या के अध्ययन एवं प्रदत्तों के संकलन उद्देश्य की पूर्ति हेतु शोधार्थी ने प्रयोगात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग किया है। **माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं के हिन्दी भाषा में उपलब्धि परीक्षण करने के लिए शोधकर्ता द्वारा एक प्रश्नावली का निर्माण किया गया, इस प्रश्नावली में हिन्दी भाषा व्याकरण के संज्ञा, के 25 प्रश्नों को सम्मिलित किया गया।**

- **शोध उपकरण**

अ. उपलब्धि परीक्षण (शोधार्थी द्वारा स्वनिर्मित प्रश्नावली)

शोध परिणाम

एकत्रित प्रदत्तों के सारणीयन के पश्चात् निर्धारित परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया, प्रत्येक परिकल्पना के परीक्षण हेतु समूहों (नियंत्रित एवं प्रयोगात्मक) का मध्यमान, मानक विचलन तथा 0.5 सार्थकता स्तर पर श्जश का मान ज्ञात किया गया। इस प्रकार प्रत्येक परिकल्पना के विश्लेषण से परिणाम प्राप्त किए।

संज्ञा के ज्ञान की उपलब्धि में प्रयोगात्मक व नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

सारणी – 1.1

क्र.	समूह	विद्यार्थियों की संख्या	स्वतंत्रता का अंश (df)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	't'मान	सार्थकता
1	प्रयोगात्मक समूह	200	398	6.84	1.378	1.886	परिकल्पना अस्वीकृत
2	नियंत्रित समूह	200		6.62	1.343		सार्थक अंतर है

आरेख – 1.1

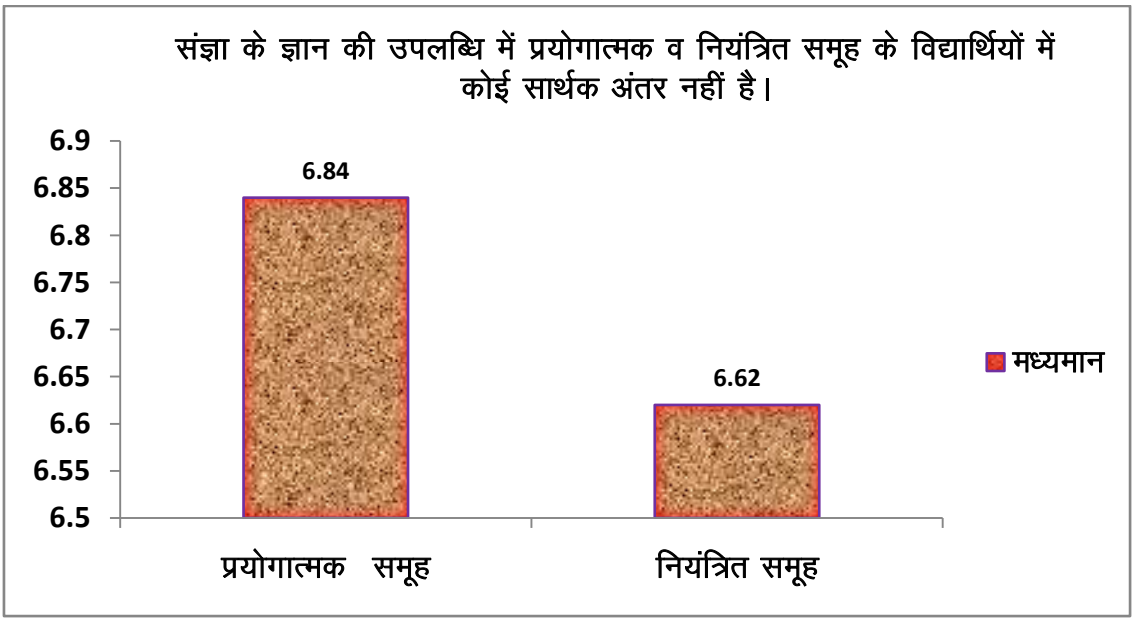

सारणी 1.1 एवं आरेख क्र. 1.1 से स्पष्ट है कि स्वतंत्रता के अंश 398 के लिए प्रयोगात्मक समूह का मध्यमान 6.84 तथा नियंत्रित समूह का मध्यमान 6.62 है। इसी प्रकार प्रयोगात्मक समूह का मानक विचलन गणना करने पर 398 स्वतंत्रता के अंश के लिए 0.5 सार्थकता स्तर पर't'का मान 1.886 प्राप्त हुआ जो 't'के सारणी मान 1.64 से अधिक है। अतः यह परिकल्पना संज्ञा के ज्ञान की उपलब्धि में प्रयोगात्मक व नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों में कोई सार्थक अंतर नहीं है, अस्वीकृत की जाती है। अर्थात यह स्पष्ट है कि मल्टीमीडिया उपागम द्वारा प्रयोगात्मक समूह की संज्ञा के ज्ञान की उपलब्धि नियंत्रित समूह की उपलब्धि से अधिक पाई गई।

शोध अध्ययन में एकत्रित प्रदत्तों के विश्लेषण से निम्न परिणाम प्राप्त हुए–

1. जिन विद्यार्थियों को मल्टीमीडिया द्वारा शिक्षण दिया गया, उनकी हिन्दी भाषा में उपलब्धि परंपरागत विधि द्वारा पढ़ाए जाने वाले विद्यार्थियों की तुलना में उच्च पाई गई।
2. ऐसे विद्यार्थियों जिन्हें परम्परागत विधि से संज्ञा का ज्ञान प्रदान किया तथा जिन विद्यार्थियों को मल्टीमीडिया द्वारा संज्ञा का ज्ञान प्रदान किया गया, दोनों समूहों में से उपलब्धि का स्तर मल्टीमीडिया द्वारा पढ़ाए गए विद्यार्थियों का अधिक रहा।

परिणाम

शोधार्थी द्वारा किए गए शोध के परिणामों में यह पाया गया, कि लिंग के आधार पर हिन्दी भाषा और व्याकरण की उपलब्धि में नियंत्रित समूह व प्रायोगिक समूह के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। यही निष्कर्ष कुमार (2005) द्वारा किए गए शोध में भी दृष्टिगत हुआ था। उनके द्वारा किए गए शोध में यह भी पाया गया जिन विद्यार्थियों

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

को कम्प्यूटर का ज्ञान है उन विद्यार्थियों की हिन्दी व्याकरण व भाषा में उपलब्धि अधिक पाई गई। जिंग लुई (2010) ने कॉलेज के विद्यार्थियों की अंग्रेजी विषय में मल्टीमिडिया के प्रभाव का अध्ययन किया तथा पाया कि विद्यार्थियों की उपलबिध पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ा, किन्तु उनकी अधिगम के प्रति रूप में तीव्र वृद्धि अवश्य पाई गई। इसके विपरीत शोधार्थी द्वारा माध्यमिक कक्षा के विद्यार्थियों पर मल्टीमिडिया के प्रभाव का जो अध्ययन किया, उसमें विद्यार्थियों की उपलब्धि सार्थक रूप से उच्च पाई गई।

मन्था श्रीनिवास (2011) ने राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ हेतु किए गए शोध में पाया कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की जब कम्प्यूटर द्वारा संस्कृत विषय का अध्ययन कराया गया तो उनकी उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया गया। यही निष्कर्ष शोधार्थी के अध्ययन में माध्यमिक कक्षा के विद्यार्थियों हेतु प्राप्त हुआ अर्थात् जब विद्यार्थियों को मल्टीमिडिया द्वारा शिक्षित किया गया तो उनकी हिन्दी भाषा व व्याकरण की उपलब्धि में पर्याप्त सुधार देखा गया।

पूर्व शोधार्थियों द्वारा किए गए अध्ययनों से प्राप्त परिणामों की शोधार्थी द्वारा प्राप्त परिणामों से मिलान करने पर यह दृष्टिगत होता है कि मल्टीमीडिया (इंटरनेट, कम्प्यूटर तथा अन्य इलेक्ट्रॉनिक माध्यम) द्वारा विद्यार्थियों को शिक्षित करने पर उनकी सभी विषयों में उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है, प्रायः विद्यार्थियों की उपलब्धि परम्परागत शिक्षण विधियों से उच्च पाई गई। इसी प्रकार शिक्षकों का भी कम्प्यूटर, इन्टरनेट, मल्टीमिडिया आदि के प्रति सकारात्मक रूझान पाया गया।

प्रस्तुत शोध 'माध्यमिक स्तर पर हिन्दी भाषा शिक्षण में मल्टीमिडिया उपागम का अधिगम स्तर पर प्रभाव का अध्ययन' करने हेतु किया गया शोध के उपरान्त प्राप्त परिणामों को यदि संक्षेप में व्यक्त किया जाए तो हम यह कह सकते हैं कि यदि विभिन्न मल्टीमिडिया प्रविधियों द्वारा विद्यार्थियों को हिन्दी भाषा व व्याकरण की शिक्षा प्रदान की जाए तो उनका उपलब्धि स्तर अथवा अधिगम स्तर उच्च हो जाता है।

अतः प्रस्तुत शोध के विभिन्न शैक्षिक निहितार्थों को शोधार्थी निम्न बिन्दुओं द्वारा प्रस्तुत कर रहा है–

1. शोध के परिणामों को दृष्टिगत रखते हुए यदि विद्यालय प्रशासन चाहे तो अपने विद्यालय में कम्प्यूटर तथा एल.ई.डी. प्रोजेक्टर की व्यवस्था कर न केवल हिन्दी भाषा वरन् अन्य विषयों का शिक्षण सभी कक्षा के विद्यार्थियों को करा सकते है, जिससे विद्यार्थियों के अधिगम स्तर पर निश्चित रूप से सुधार होगा।
2. मल्टीमिडिया उपकरणों द्वारा शिक्षण करने पर विद्यार्थियों को नीरस परम्परागत शिक्षण विधियों से मुक्ति मिलेगी तथा वे रुचिकर तरीके से अधिगम कर सकेंगे।
3. मल्टीमिडिया उपकरणों द्वारा शिक्षण करने पर कक्षा में पाए जाने वाले सभी स्तरों के विद्यार्थी जैसे प्रतिभाशाली, सामान्य, पिछड़े, विशिष्ट समान से विषय का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।
4. मल्टीमिडिया द्वारा शिक्षण करने वाले शिक्षकों को अपने विषय की तैयारी में अधिक श्रम नहीं करना होता, तथा वे विद्यार्थियों को अपना विषय अधिक स्पष्टता एवं रूचिकर तरीके से समझा सकते हैं।
5. कभी–कभी यदि कक्षा में शिक्षक किन्हीं कारणवश उपस्थित न हो सके, तो मल्टीमिडिया द्वारा विद्यार्थियों के समय का सदुपयोग हो जाता है, अर्थात् छात्र विषय से संबंधित कुछ न कुछ ज्ञान कम्प्यूटर आधारित प्रणाली से प्राप्त कर सकते हैं।
6. सरकार एवं शिक्षा विभाग को चाहिए कि अपने विद्यालयों में कम्प्यूटर तथा अन्य मल्टीमिडिया उपकरणों की व्यवस्था कर शिक्षकों को प्रशिक्षण दें, जिससे वे विद्यार्थियों को मल्टीमिडिया द्वारा रुचिकर तरीके से अध्ययन करा सकें।

संदर्भग्रन्थ सूची

1. तिवारी डॉ. भोलानाथ, ''सम्यक भाषा हिन्दी'' प्रभात प्रकाशन दिल्ली–6 प्रथम संस्करण, 1957
2. ैनीपंए ैण्च्एए डमीतवजतंए च्एण ''शैक्षिक अनुसंधान के मूलतत्व'', विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–2, 1971
3. बुच एम.वी., ''पाँचवा सर्वे ऑफ रिसर्च एन एज्युकेशन'', द्वितीय संस्करण, एन.सी.ई.आर.टी, नई दिल्ली, 1972
4. पाठक पी.डी., ''भारतीय शिक्षा और उसकी समस्यायें'', विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 1972
5. वात्सायन सच्चिदानन्द, ''आधुनिक हिन्दी साहित्य'', राजपाल एण्ड सन्स कश्मीरी गेट, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1976
6. नायर, पी.आर., मैसूर टीचर, एटिचुड्स स्केल्स, डिपार्टमेंट ऑफ एजुकेशन, मैसूर यूनिवर्सिटी, 1977
7. बघेगा गिजु भाई, ''प्राथमिक विद्यालय में भाषा शिक्षा'', संस्कृत साहित्य, दिल्ली, 2000
8. पाण्डेय, डॉ. राम प्रकाश, ''उच्चतर माध्यमिक स्तरीय विद्यार्थियों में सहयोग मूल्य विकास हेतु मूल्य मनोवैज्ञानिक संकल्पना के संदर्भ में पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं की प्रभाविता का अध्ययन'', शोध समीक्षा और मूल्यांकन, अगस्त – 2009, वोल्यूम–II, इश्यू–7, प्रकाशक डॉ. कृष्णवीर सिंह द्वारा आर.आर. प्रिन्टर्स, जयपुर ।
9. रदरफोर्ड व होल्ड स्टोक (1995) ''कम्प्यूटर तकनीकी के प्रति उच्च अभिवृत्ति का अध्ययन''
10. कोसेर्सर्टटन व कालेले मनेने (1996) ''छात्रों व छात्राओं के कम्प्यटूर के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन''
11. नीरा चेतनलाल (1998) ''व्याख्यान विधि व मल्टीमीडिया साधनों के सम्मिश्रण का अधिगम पर प्रभाव संबंधी तुलनात्मक अध्ययन''
12. अग्रवाल कुसुम (1999) ''शैक्षिक रूप से असफल किशोरों के माता–पिता की अभिवृत्ति एवं उनकी सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि पर अध्ययन''
13. खेडा कौशल किशोर (2000) 'मध्यप्रदशे राज्य के प्राथमिक विद्यालयों के ढाँचा में छात्र उपलब्धियों के साथ अधिगम तथ्यों का अध्ययन''
14. मित्रा स्टीफैंन्सी मीयर (2000) ''इन्टरनेट आधारित अधिगम सामग्री का तथा पाठ्यपुस्तकों का प्रयोग करने वाले विद्यार्थियों के कम्प्यूटर तकनीकी के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन''

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

15. इर्विन (2001) ''इन्टरनेट आधारित अधिगम के अभिवृत्ति के सहसम्बन्ध कारकों का अध्ययन''
16. सेठी उर्मि व कौर विरेन्दर (2014) ''10वीं कक्षा के छात्रों में विज्ञान एवं विद्यालय वातावरण में रूचि का विज्ञान में उपलब्धि के लिए सहसंबंध'' एक अध्ययन।
17. अनिता (2002) ''को–ऑपरेटिव लर्निंग एण्ड मल्टीमीडिया' का हाई स्कूल छात्रों के लेखन पर प्रभाव का अध्ययन''
18. राव वी.के. (2003) ''वर्ल्ड वाइड वेब के शिक्षा पर प्रभाव का अध्ययन''
19. नीओ एण्ड नीओ (2001) ''इनोवेटीव टीचिंग यूजिंग मल्टीमीडिया इन ए प्रॉब्लम बेस्ठ लर्निंग इन्वायरोमेंट'' एक अध्ययन
20. कुमार (2005) ''कक्षा नौवीं के छात्रों की व्याकरण संबंधी उपलब्धियों का अध्ययन''
21. बेहरा के. और नायक, बी. (2005) ''इफैक्ट ऑफ एक्टिविटी–बेस्ड टीचिंग–लर्निंग प्रॉसेस एण्ड कॉम्पीटेन्सी–बेस्ड टीएलएम ऑन द अचीवमेण्ट ऑफ द लर्नर्स'' एक प्रयोगात्मक अध्ययन।

© RRIJM 2015, All Rights Reserved